ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम विषय-हिंदी

दिनांक—12/11/2020

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

<u>एन सी इ आर टी पर आधारित</u>

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।

जाके हिरदै साँच है, ताको हिरदै आप।।१।।

अर्थात् सत्य के समान कोई तपस्या नहीं है और झूठ के समान कोई पाप नहीं है। जिसके हृदय में सत्य का वास है, उसी के हृदय में परमात्मा का निवास है। इसका तात्पर्य यह है कि सत्य ऐसी एक महान तपस्या है, जिससे बढ़कर और कोई तपस्या नहीं हो सकती है। इसी तरह से झूठ एक ऐसा घोर पाप है, जिससे बढ़कर और कोई पाप नहीं हो सकता है। अतएव सत्य रूपी तपस्या के द्वारा ही ईश्वर की प्राप्ति सम्भव होती है।

बोली एक अनमोल है, जो कोई बोले जानि।
~~~~~~~~~~

हिये तराजू तौलिके, तब मुख बाहर आनि।।२।।

अर्थात् जो व्यक्ति अच्छी वाणी बोलता है ,वही जानता है कि वाणी अनमोल रत्न है। इसके लिए हृदय रूपी तराजू में शब्दों को तोलकर ही मुख से बाहर निकालना चाहिए।कभी भी बिना सोच-विचार किये नहीं बोलना चाहिए ।

अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।

अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप ।।३।।

न तो अधिक बोलना अच्छा है, न ही जरूरत से ज्यादा चुप रहना ही ठीक है। जैसे बहुत अधिक वर्षा भी अच्छी नहीं और बहुत अधिक धूप भी अच्छी नहीं है।अर्थात् अति का हमेशा त्याग करना चाहिए।

काल्ह करै सो आज कर, आज करै सो अब।

पल में परलै होयगी, बहुरि करैगो कब ।।४।।

कबीर दास जी समय की महत्ता बताते हुए कहते हैं कि जो कल करना है उसे आज करो और जो आज करना है उसे अभी करो , कुछ ही समय में जीवन ख़त्म हो जायेगा फिर तुम क्या कर पाओगे !!

क्षण भर में क्या होगा कोई नहीं जानता है इसलिए समय व्यर्थ न कर कोई भी कार्य तुरंत कर लेना चाहिए क्योंकि क्षण भर में कुछ भी हो सकता है।

धन्यवाद

कुमारी पिंकी “कुसुम”

🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲